कविग्राम

वर्ष 3, अंक 01, जनवरी 2022

अधिकारियों की संवेदना

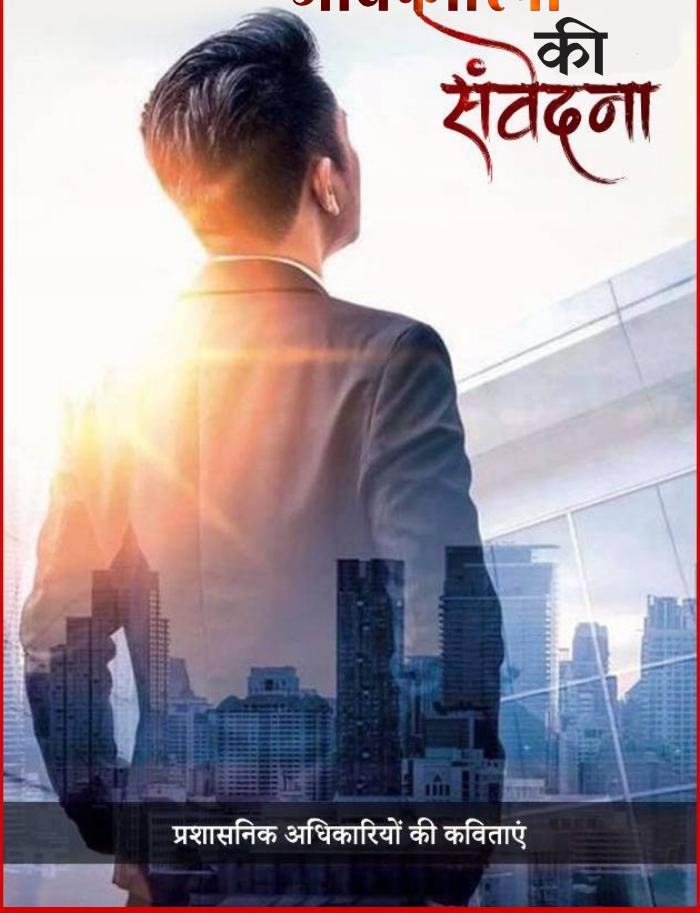

प्रशासनिक अधिकारियों की कविताएं

कविग्राम

वर्ष 3, अंक 01, जनवरी 2022

परामर्श मण्डल
सुरेन्द्र शर्मा
अरुण जैमिनी
विनीत चौहान

अतिथि सम्पादक
महेश गर्ग बेधड़क

सम्पादक
चिराग़ जैन

सह सम्पादक
मनीषा शुक्ला

कला सम्पादक
प्रवीण अग्रहरि

प्रकाशन स्थल
नई दिल्ली

प्रकाशक
कविग्राम फाउण्डेशन

उपरोक्त सभी पद मानद तथा अवैतनिक हैं।
कविग्राम में प्रकाशित लेख तथा कविताओं में व्यक्त विचार उनके रचयिताओं की निजी राय है।

मूल्य : निःशुल्क

आवरण सज्जा : प्रवीण अग्रहरि

इंटरनेट लिंक

पत्रिका में जहाँ भी ऐसा चिह्न बना है वह एक इंटरनेट लिंक है उसे स्पर्श करने पर, संबंधित पृष्ठ खुल जाएगा

इंटरनेट लिंक

kavigram.com
TheKavigram@gmail.com
kavigramfoundation
facebook.com/kavigram
youtube.com/c/KaviGram
8090904560
thekavigram
thekavigram

भीतर के पृष्ठों पर

सम्पादकीय / कविग्राम: एक साकार स्वप्न / महेश गर्ग बेधड़क / 04
आवरण कथा / दायित्वों से घिरी संवेदना / चिराग़ जैन / 05
कविता / कोरोना और ख़ाक़ी / पवन जैन / 07
गीत / प्रेयसी / अखिलेश मिश्र / 10
बाल-कविता / कितनी सारी बातें / महेश गर्ग बेधड़क / 11
विचार-कविता / वो आने वाले हैं / डॉ. अमित श्रीवास्तव / 13
क्षणिकाएँ / क्यूँ बड़े हो गये / डॉ. देवेन्द्र कुमार धोदावत / 15
मुक्तछन्द / अहल्या / धर्मेन्द्र देव मिश्र / 16
प्रेम-कविता / यादों की करवट / धीरा खण्डेलवाल / 18
दर्शन / मृत्यु ही है निश्चित / डॉ. धीरज जैन / 19
कुण्डलिया / धाकड कवि की कुण्डलियाँ / हेमन्त कुमार / 20
ग़ज़ल / मुहब्बत की तरह / नैना सौइन कपिल 'सहर' / 21
छन्दमुक्त / दस्तक / नीरजा भाटिया / 22
गीत / मन की परतें / निशान्त जैन / 23
ग़ज़ल / पहचान गुनगुना के मुझे / पवन कुमार / 24
व्यंग्य / डायनासॉर की भारत यात्रा / राजकुमार वर्मा / 25
प्रेम-कविता / चांद पे चिट्ठी / डॉ. राजश्री सिंह / 28
गीत / तृप्ति / रमेश यादव / 29
जन-कविता / कोयला खनिक / डॉ. संजय अलंग / 30
गीत / कल, आज और कल / संजीव जैन / 31
विचार-कविता / ख़तरा / शैलेश कुमार सिंह / 32
स्त्री-मन / मैं क्यूँ बदलूँ? / तेजस्वनी गौतम / 33
विचार-कविता / सबके हिस्से का / वीरेन्द्र गोयल / 35
कवि-कुनबा कलैण्डर / जनवरी / 36
कवि-सम्मेलन संग्रहालय / बैरागी जी का पत्र / 38
कवितैव कुटुम्बकम् / कहाँ से लाऊँ सिलसिलेवारिता / डॉ. अशोक चक्रधर / 39
कोकिला कुल / महादेवी वर्मा / सोनरूपा विशाल / 43
श्रद्धांजलि / रमेश उपाध्याय बाँसुरी / 48
श्रद्धांजलि / दिव्या दुबे नेह / 49

कविग्राम : एक साकार स्वप्न

कविग्राम की परिकल्पना हिन्दी के चितेरे युवा कवि चिराग़ जैन ने तब की थी, जब उन्होंने पहली बार यह महसूस किया कि अपनी सांस्कृतिक धरोहर को सहेजने का काम तब तक अधूरा ही रहेगा जब तक कि हम अपने साहित्य, विशेष रूप से-वाचिक परम्परा के ख़ज़ाने को सहेजने का काम पूरा नहीं कर लेते। इस सम्बन्ध में उन्होंने सम्भावित सहयोगियों की एक टीम जुटाई और एक संकल्प के साथ अपने काम में जुट गये। अड़चनें भी तमाम आयीं, कहीं सम्बन्ध काम आये तो कहीं जिजीविषा काम आयी। बहरहाल मेहनत रंग लाती रही। सम्भावना की भागीरथी को सद्भावना की ज़मीन पर उतारने का काम मनोयोग से किया गया, सो पूरा होना ही था।

अक्टूबर 2019 में पहले अंक के प्रकाशन से लेकर पिछले माह दिसम्बर 2021 तक कविग्राम पत्रिका के कुल 15 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। इतनी छोटी-सी अवधि में कविग्राम के पाठकों की संख्या भी बढ़ते हुए दस हज़ार से अधिक हो चुकी है और लगातार बढ़ ही रही है। दो माह पूर्व ही एक काव्य-यात्रा से लौटते समय सार्थक चर्चा हुई कि जब तक देश की प्रशासनिक मेधा में रचनात्मक दृष्टिकोण, सकारात्मक सोच और सम्वेदना जीवित है, तब तक हम यह इत्मीनान कर सकते हैं कि देश का भविष्य सुरक्षित हाथों में है। आनन-फ़ानन में यह निर्णय भी ले लिया गया कि कविग्राम का वर्ष 2022 का प्रथम अंक उन साहित्य मनीषियों के नाम रहेगा जो पूर्णकालिक साहित्यकार नहीं हैं अपितु कार्यपालिका एवं न्यायपालिका में अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए भी अपनी रचनाधर्मिता को जीवंत बनाये हुए हैं। बिना मेरी राय जाने मुझे भी उसी पाले में रखकर इस अंक के सम्पादन की ज़िम्मेदारी मुझे ही सौंप दी गयी।

इसी उद्देश्य को सिरे चढ़ाते हुए हिन्दी साहित्य की लोकप्रिय डिजिटल पत्रिका 'कविग्राम' का वर्ष 2022 का पहला अंक आज आपके हाथों में है। अब यह तो आपकी प्रतिक्रिया ही बतायेगी कि हम अपने इस प्रयास में कहाँ तक सफल हुए हैं...

महेश गर्ग 'बेधड़क'
भारतीय रेल सेवा (1987)

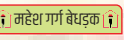

दायित्वों से घिरी संवेदना

चिराग़ जैन

फ़िक्र-ए-दुनिया में सर खपाता हूँ
मैं कहाँ और ये बवाल कहाँ

मिर्ज़ा ग़ालिब के इन्हीं दो मिसरों में कविग्राम के इस अंक की भूमिका समाहित है। कहते हैं, हर इन्सान ज़िन्दगी में एक बार प्रेम ज़रूर करता है और एक बार कविता ज़रूर लिखता है। कई दफ़ा ये कविताएँ टूटी-फूटी तुकबन्दियों तक सीमित होकर रह जाती हैं और कभी-कभी श्रेष्ठतम साहित्य की श्रेणी में जा बैठती हैं।

कवि-सम्मेलनीय यात्राओं के दौरान राजनीतिज्ञों, उद्योगपतियों तथा आला अधिकारियों से जब भी चर्चा हुई तो कहीं न कहीं इन सबके भीतर का यह कवि मुखरित होता दिखायी दिया। कई जगह तो कवि-सम्मेलन से पूर्व ग्रीन रूम की चर्चाओं में आयोजन मण्डल के किसी सदस्य से ऐसी श्रेष्ठ कविता सुनने को मिली कि अपनी प्रसिद्धि उनके सृजन के समक्ष बौनी लगने लगी।

सरकारी दफ़्तरों में ऐसे ही सैंकड़ों बेहतरीन कवियों को दायित्वों की फाइल्स के ढेर में ग़ुम होते देखा जा सकता है। न्यायाधीश तथा राजपत्रित अधिकारी सामान्यतया अध्ययनप्रिय होते हैं, अतएव इनमें से किसी की भी कोई साहित्यिक पृष्ठभूमि रही हो तो इनके भीतर का कवि आकार लेने ही लगता है।

मेरा निजी अनुभव रहा है कि प्रशासनिक अधिकारियों, न्यायालयों, इंजीनियरिंग कॉलेजों, प्राध्यापकों, मेडिकल कॉलेजों, डॉक्टरों तथा कॉरपोरेट हाउसेज़ में कविता-पाठ करने से सर्वाधिक संतुष्टि मिलती है। कहीं न कहीं श्रोतादीर्घा की मेधा तथा मनीषा से जो प्रतिक्रिया प्राप्त होती है, उससे मंच के कवियों का मन करता है कि यहाँ अपना सर्वश्रेष्ठ सुनाया

जाए और यह प्रतिक्रिया तभी उत्पन्न हो सकती है, जब श्रोतादीर्घा कविता के पारखियों से सज्ज हो।

राजनैतिक नभमण्डल में दैदीप्यमान काव्य के ध्रुवतारों पर हम एक पूरा अंक प्रकाशित कर चुके हैं। किन्तु देश को संचालित करनेवाले अधिकारियों की व्यस्तता से उनकी कविता के लिए वक़्त के कुछ लम्हात चुराने में हमें काफ़ी समय लग गया। दायित्वों से घिरे अधिकारियों का जीवन दूर से देखने में सुकून भरा ज़रूर लगता है लेकिन संवेदनशील मन यह समझ सकता है कि पानी के तल पर निस्पन्द दिखने वाली बत्तख इसीलिए आराम की मुद्रा में दिखायी देती है कि पानी के भीतर उसके पाँव अनवरत गतिशील रहते हैं।

हिन्दी साहित्य ने ऐसे अनेक महनीय कवियों की संगत प्राप्त की है जो लौकिक जीवन में बड़े प्राशासनिक पदों पर आसीन रहे हैं। डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' विश्वविद्यालय के कुलपति रहे हैं। लोकप्रिय गीतकार श्री रमानाथ अवस्थी तथा वरिष्ठ ग़ज़लकार डॉ. लक्ष्मीशंकर वाजपेयी आकाशवाणी के निदेशक रह चुके हैं। कोटा के श्री कुमार शिव न्यायिक अधिकारी रहे हैं। वर्तमान में श्री संजय झाला जयपुर में उप-निदेशक के दायित्व का निर्वाह कर रहे हैं। और भी न जाने कितने ही व्यक्तित्व हैं जिन्होंने कवि-सम्मेलनीय मंच पर अपने लौकिक जीवन के पद का कोई प्रचार-प्रसार करना आवश्यक नहीं समझा।

यह अंक इस प्रकार के व्यक्तित्वों से ठीक उलट उन लोगों को समर्पित है जो अपनी प्राशासनिक ज़िम्मेदारियों से इतने अधिक घिरे हुए हैं, कि स्वयं भी अपने भीतर के कबीर से यदा-कदा ही मिल पाते हैं। लेकिन इस बात से भी इंकार नहीं किया जा सकता कि नोटशीट और कार्यालयी प्रपत्रों में व्यस्त रहते हुए जब कभी कोई क्षण इनकी संवेदना के नाम होता है तो उस क्षण में कविता अपनी पूरी भव्यता के साथ प्रकट होती है।

वर्तमान में मध्यप्रदेश में महानिदेशक होमगार्ड्स के पद पर आसीन श्री पवन जैन वर्ष 1986 की सिविल सेवा परीक्षा में भौतिक शास्त्र जैसे विशुद्ध विज्ञान के विषय को हिन्दी माध्यम में लिखकर चयनित होनेवाले भारतीय पुलिस सेवा के पहले अधिकारी बने। मध्यप्रदेश में संस्कृति एवं राजभाषा के आयुक्त तथा अन्य अनेक महत्त्वपूर्ण पदों पर सेवा प्रदान करते हुए भी इन्होंने अपनी कविता को सदैव सक्रिय रखा। यही कारण है कि साहित्य तथा प्रशासनिक सेवा दोनों ही क्षेत्रों के तमाम उल्लेखनीय पुरस्कार इनके खाते में विद्यमान हैं। श्री पवन जैन की कविताएँ अनेक संकलनों में संकलित हैं। आठवें तथा नवें विश्व हिन्दी सम्मेलन में आपकी

सक्रिय भागीदारी तथा उपस्थिति रही। लालक़िले पर आयोजित होनेवाले देश के सबसे बड़े कवि-सम्मेलन में आप पिछले सोलह वर्ष में चौदह बार काव्यपाठ कर चुके हैं। इसके अतिरिक्त वर्ष 2017 में लालक़िले के ऐतिहासिक मुशायरे की आपने अध्यक्षता भी की है।

हाल ही में कोरोना की महाव्याधि के दौरान श्री पवन जैन ने भारतीय पुलिस के उन सैंकड़ों जवानों के नाम एक कविता लिखी, जो अपनी जान जोखिम में डालकर मनुष्यता की रक्षा करने में संलग्न रहे :-

कोरोना से जीत जाओ जब जंग
पा जाओ अपने पुराने रंग-ढंग
तब मत कहना
कि हम कर्मवीर, देवदूत या महान हैं;
बस इतना कह देना, कि हम भी इन्सान हैं।

लॉकडाउन में
जब आप घरों में बन्द पड़े थे,
तब हम ख़ाकी पहनकर
आपकी सुरक्षा के लिए
गली , नुक्कड़ और चौराहों पर खड़े थे।
किसी बीमार को अस्पताल पहुँचाने में,
किसी ज़रूरतमन्द को मदद दिलाने में,
या फिर किसी संक्रमित बस्ती को
सील करवाने में;
सबसे पहले हम ही तो आगे बढ़े थे ।
हाँ, हम ही तो वर्दी पहनकर
पहली पंक्ति में खड़े थे।

लोगों को रोकने-टोकने
और आइसोलेट करने में,
हमने लाठी, पत्थर
और तलवारों के कितने वार सहे थे ।
किसने देखा था
कि ख़ाकी पर कितने रक्तबिन्दु बहे थे।
डॉक्टरों और सफ़ाईकर्मियों को छोड़

सभी तो इस वायरस से सहमे और डरे थे।
मगर फिर भी हम ख़ाकीवाले
अपनी ड्यूटी पर मुस्तैद खड़े थे...!

बन्द थे दफ़्तर, बन्द थी दुकानें
शहर था बन्द, सन्नाटा भारी था।
नाज़ुक वक़्त में भी
हर मुश्किल मौक़े पर पहुँचा वर्दीधारी था।
लोगों का परिवार बचाने
घण्टों गश्त लगाते थे।
पर अपने परिवार की ख़ातिर
हफ़्तों घर नहीं जाते थे ।
यूँ तो हमारे भी हज़ारों साथी
इस महामारी की चपेट में पड़े थे।
फिर भी हम ख़ाकीवाले वर्दी पहने
अपने फ़र्ज़ पर अड़े थे...!

मुझे भी लगती है भूख और प्यास।
वाहनों के धुएँ से मेरी भी घुटती है श्वास।
नीन्द और थकान मुझको भी सताती है।
सच बताऊँ!
नन्हीं-सी बिटिया
ड्यूटी पर बहुत याद आती है।

काँटे... पत्थर...
नफ़रत और गाली से ही
बनती है मेरी हस्ती;
पुलिस की शहादत को करें नमन
हम भी ढूंढते हैं ऐसी बस्ती।
घनघोर अन्धेरे में भी
हम मशाल थामकर आगे बढ़े हैं।
सुबह, शाम और रात की छोड़िए
कई- कई दिन हर मुसीबत के सामने
हम पुलिसवाले अड़े हैं...!

टूट जाता लॉकडाऊन का ही लॉक
ग़र हम थोड़ा भी डगमगाते।
फिर कैसे बेफ़िक्र होते बुज़ुर्ग
और कैसे बच्चे मुस्कुराते।
यदि जन-जन का हौसला
हम ख़ाकीवाले नहीं बढ़ाते।

कोरोना से जीत जाओ जब जंग
तब मत कहना
कि हम कर्मवीर , देवदूत या महान हैं;
बस इतना कह देना
कि हम भी इन्सान हैं।

श्री पवन जैन की ही तरह वर्ष 2009 के प्रशासनिक अधिकारी श्री अखिलेश कुमार मिश्र भी अपनी रचनाधर्मिता के माध्यम से सृजनशील समाज में ख़ासे लोकप्रिय हैं। मन के अत्यन्त कोमल तारों को स्पर्श करते हुए आपके गीत तथा ग़ज़लियात से साहित्य अनवरत समृद्ध हो रहा है। उत्तर प्रदेश में अनेक महत्त्वपूर्ण पदों का निर्वाह करते हुए वर्तमान में आप उत्तर प्रदेश ट्रांस्पोर्ट में विशेष सचिव के रूप में नियुक्त हैं। श्री मिश्र भारत के अनेक प्रतिष्ठित काव्य मंचों से काव्यपाठ कर चुके हैं।

इसके साथ ही भारत की भौगोलिक सीमाओं से पार भी अनेक देशों में आपकी कविताओं से कवि-सम्मेलनों को प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है। आप लालक़िले पर आयोजित होने वाले गणतन्त्र दिवस कवि-सम्मेलन में भी काव्यपाठ कर चुके हैं।

वाणी प्रकाशन से प्रकाशित आपके प्रथम संग्रह 'यूँ ही' के लिए आपको उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 'ग़ालिब अवार्ड' से भी नवाज़ा जा चुका है। सृजन के आकाश में श्री अखिलेश मिश्र अनवरत नये-नये नखत जड़ते जा रहे हैं। मानवीय सम्बन्धों में व्याप्त सम्वेदना उनके अशआर में सहसा दिखायी दे जाती है। इसके अतिरिक्त उनके गीत भी शृंगार की कोमल पाँखुरियों को चूमकर चहकते जान पड़ते हैं। काव्य की मूलभूत सम्वेदनाओं से ओतप्रोत अखिलेश जी की लेखनी हिन्दी साहित्य के नक्षत्र में गौरव की आभा से दीप्त नक्षत्रों का अंकन कर रही है।

श्री अखिलेश मिश्र के सृजनकोश से एक गीत (प्रेयसी) चुनकर कविग्राम के पाठकों के लिए हम लाये हैं, ताकि उनके रचनाकार की आपको कुछ झलक मिल सके-

तुम अटल विश्वास हो, छल हो ,बता दो
प्रेयसी किस पुण्य का फल हो बता दो

तुम अधर पर प्यास-सी हो,
रति निपुण मधुमास-सी हो
रूपसी मदिरा का मद हो
वृन्दावन के रास-सी हो
मुझमें तुम पल भर या प्रतिपल हो, बता दो
प्रेयसी किस पुण्य का फल हो, बता दो

प्रीति की हो सिन्धु तुम ही
हृदय-नभ की इन्दु तुम ही
मैं दहाई तुम इकाई
रेखा मैं हूँ, बिन्दु तुम ही
प्रेम में स्थिर हो कि चंचल हो बता दो
प्रेयसी किस पुण्य का फल हो बता दो

चान्दनी हो तुम सृजन की
या प्रलय की पटकथा हो
मिलन की हो पूर्णमासी
या अमावस की व्यथा हो
कौन-सी तिथि, कौन-सा पल हो, बता दो
प्रेयसी किस पुण्य का फल हो बता दो

हो सनातन धर्म-सी तुम
मेरे हर सत्कर्म-सी तुम
हो पुरातन प्रणय सुख या
एक नूतन मर्म-सी तुम
यक्ष प्रश्नों का सरल इक हल बता दो
प्रेयसी किस पुण्य का फल हो बता दो

वर्तमान अंक के अतिथि सम्पादक तथा 'काका हाथरसी पुरस्कार' जैसे हास्य के सर्वोच्च पुरस्कार से सम्मानित श्री महेश गर्ग बेधड़क भी भारतीय रेल सेवा में 1987 बैच के अधिकारी हैं। हिन्दी कवि-सम्मेलन जगत् में वे एक हास्य कवि के रूप में प्रतिष्ठित हैं किन्तु उनकी सम्वेदनशील कविताएँ मन में गहरे तक प्रवेश करने की क्षमता रखती हैं। इतना ही नहीं वे बालमन की कोमल भावनाओं को भी अपनी कविता में उकेरने का कौशल जानते हैं। श्री महेश गर्ग बेधड़क की एक ऐसी कविता आप तक पहुँचा रहा हूँ, जो बिटिया के मीठे बचपन तक की सैर करा देगी-

मम्मी की मैं सोन-चिरैया
दादी कहती 'ता-ता-थैया'
इसे ज़ोर से डाँटो पापा
मुझे लोमड़ी कहता भैया

जब पापा को 'मिस' करती हूँ
दरवाज़े को 'किस' करती हूँ
तभी अचानक ही फटाक से
पापा घर आ जाते हैं
आते ही बाँहों में भर के
चक्कर कई लगाते घर के
कन्धों पर सवार होकर
मैं घोड़ा ख़ूब चलाती हूँ
फिर मैं धीरे-धीरे सबकी
एक-एक बात बताती हूँ
जिसकी बात शुरू करती हूँ
वो मुझसे घबराते हैं
बड़ा मज़ा आता है जब
सब पीछे-पीछे आते हैं।
बातें करते-करते-करते
जब मेरा मुँह थक जाता है
मेरा घोड़ा रुक जाता है

मम्मी बतिया सकती घण्टों
बच्चे तो थक जाते हैं
सोचो, कितना छोटा मुँह है
कितनी सारी बातें हैं।

इन तीन रचनाकारों की रचनाएँ पढ़कर आपको समझ आ गया होगा कि ऊँची कुर्सियों पर बैठकर भी कविता की सम्वेदना का हरापन और खरापन जस का तस है। इस अंक के आगे के पृष्ठों को ज्यों'-ज्यों आप पलटेंगे त्यों-त्यों आपको अहसास होगा कि कविता की सभी विधाओं में, साहित्य के सभी रसों में और शिल्प के प्रत्येक प्रारूप में सृजन करने की क्षमता इन लेखनियों में है। संस्कृतनिष्ठ परिष्कृत हिन्दी हो अथवा लरजिश के लहजे से लबरेज़ उर्दू; आम बोलचाल की भाषा हो अथवा हिन्दी से हिंग्लिश बन रही अत्याधुनिक शैली; इन रचनाओं में सभी रंग देखने को मिल जाएंगे। विचार के स्तर पर जो वैविध्य इन कविताओं में आप पाएंगे उससे यह स्पष्ट हो जाएगा कि तन्त्र का अहम् अंग होने के बावजूद इन कवियों के भीतर का मौलिक चिन्तन रंचमात्र भी प्रभावित नहीं हुआ है।

आगे के ये सफ़हे आपका यह विश्वास और सुदृढ़ करेंगे कि अट्टालिकाओं को भी ज़रा-सी नमी मिल जाए तो उनकी दरारों में पड़े अंकुर के अंकुरित होने की उत्कण्ठा साकार हो जाती है। आप यह समझ पाएंगे कि प्रशासनिक व्यस्तता तथा विवशता में संलग्न मस्तिष्क में भी अव्यक्त को समझने की पूरी क्षमता विद्यमान है। आप यह जान सकेंगे कि जिन आँखों को व्यवस्था की चौकसी के लिए नियुक्त कर दिया गया है उनकी कोरों पर भी नमी की गुंजाइश हमेशा बनी रहती है। आपको यह आभास होगा कि शिक़ायतें तथा मसअलात सुनने में व्यस्त कानों के भीतर अकथ को सुन लेने की सम्वेदनशीलता मौजूद है। इन कविताओं में आप यह अनुमान कर सकेंगे कि पूरे प्रशासन को सुचारू रूप से चलाने वाले मनुष्यों की शिराओं में भी हृदय की वह लय प्रवाहित होती है, जिसे कविता कहा जाता है।

लोरी से शुरू होने वाला भारतीय जीवन बाल-कविताओं और प्रेम-कविता की यात्रा करता हुआ वीररस की वीथियों में विचरता है और अन्ततः दर्शन तथा भक्ति तक पहुँचकर सम्पन्न हो जाता है। ऐसे परिवेश में पलकर बड़े हुए सभी मनुष्यों के भीतर काव्य के नवरस की सम्भावना मिल ही जाती है।

विरह, विचार, विवशता, व्यवस्था, व्यवहार, वीरता, वात्सल्य और वैराग्य जैसे सभी विषय आपको आगे के पृष्ठों पर संकलित मिलेंगे। इन्हें पढ़कर कविग्राम के पाठकों को साहित्यिक सुख की अनुभूति होगी और हम यह अनुमान कर सकेंगे कि कविता की संवेदना अपने पूरे सौष्ठव के साथ कहाँ-कहाँ तक विद्यमान है। चिराग़ जैन

वो आने वाले हैं

डॉ. अमित श्रीवास्तव
भारतीय पुलिस सेवा

फ़र्ज करो
कुछ लोग आयें
तेरह या बीस या पैंतालीस या सड़सठ
अनिश्चित संख्या की तरह ही
अबूझे चेहरोंवाले
फ़ौरी तौर पर सुनिश्चित नारों
और
अश्लील इशारोंवाले
वो आयें और धकियायें
गिरायें
या पीट दें
या मार दें
तुम किस भाषा में पूछोगे
उनका नाम?

कब पूछोगे?
जब वो हाथ मरोड़ते होंगे
जब वो कपड़े फाड़ते होंगे
जब वो डण्डे घुसाते होंगे

करोगे कोई प्रतिवाद
या हाथ जोड़ दोगे

या मुआफ़ी मांग लोगे
या उन्हें
उनके घरवालों के चेहरों की याद दिलाओगे
या पढ़ोगे
उनके माथे पर लिपटे
फटके का संदेश

या बाँचोगे
संविधान का कोई अनुच्छेद
या भारतीय दण्ड संहिता की कोई धारा
या कोई श्लोक,
कविता या नीति के पदों का सरल अनुवाद

पुचकारोगे
सहलाओगे
या आँखें तरेर दोगे

जवाब दोगे या स्पष्टीकरण
या आँकड़े
या किसी रिपोर्ट का हवाला
या उनके ही नेता का बयान

यक़ीन मानो
तुम इनमें से कुछ नहीं कर पाओगे
अपनी बची-खुची साँसें सहेजकर
तुम बस चिल्लाओगे
...बचाओ !

क्योंकि
ये एक आख़िरी जुमला बचा है
सभ्यता के इतिहास के पास !!

अमित श्रीवास्तव

क्यूँ बड़े हो गये

डॉ. देवेन्द्र कुमार धोदावत
भारतीय प्रशासनिक सेवा

बच्चे ही अच्छे थे, क्यूँ बड़े हो गये
एक ही कुनबे में, कई धड़े हो गये

□□□

बच्चा बड़ा हो गया, माँ का जूठा नहीं खाता
फेंकना बच्चे का खाया बिस्किट, माँ के ज़ेह्न में नहीं आता

□□□

सीमेंट की फ़र्श पर चॉक से, हम लिखते साथ-साथ थे
मेरे काँपते हाथों को थामते थे, वो माँ के हाथ थे

□□□

बहुत झुलाया था माँ ने, बेटे को पालने में
अब वो होशियार हो गया है, माँ को टालने में

□□□

जब भी ग़ुस्सा हुई, बापू का डर दिखाया माँ ने
मौक़ा डाँट का आने पर, आँचल में छुपाया माँ ने

□□□

वो क, ख, ग, पर ठहर गयी, मैं आगे बढ़ गया
बहुत ख़ुश है माँ, मैं पोथी पढ़ गया

□□□

एक कोने में गुज़र जायेगा बुढ़ापा
बच्चों को कितना भरम हो जाता है
बूढ़े तो माँ-बाप होते हैं
पर बच्चों को दिखना कम हो जाता है

देवेन्द्र कुमार धोदावत

अहल्या

श्री धर्मेंद्र देव मिश्र
भारतीय प्रशासनिक सेवा

मत हो गर्वित राम
मुक्त कर मुझे शिला से।
दोष हमारा क्या था
जो अभिशप्त हुई मैं।
रूप-लास्य-लावण्य
हमें तो दिया तुम्हीं ने।

दिया तुम्हीं ने
अनुपयुक्त वासना प्रलोभन
देवराज को।

ब्राम्ह मुहूरत का अभिवंचन किया इन्द्र ने।
मध्यरात्रि में
ऋषि को गंगा-तट उन्मुख कर
और प्रणय का छल
जो मुझसे किया इन्द्र ने,
उसका सारा दोष
मुझी पर क्यों आरोपित?

मेरा तो बस दोष यही था,
पति के आलिंगन-ऊष्मा को समझ न पायी।

किन्तु पाप का कोई भी अस्तित्व नहीं था
मन में
तन में
या जीवन में ।

मैं तो राम,
बन गयी केवल
शक्ति-स्वार्थ की एक खिलौना।
अपमानित होकर भी हमको
कुछ कह सकने का अधिकार नहीं था।
इसीलिए क्या श्रापग्रस्त कर दिया शक्ति ने!
और इन्द्र का सिंहासन
अक्षुण्ण रह गया बिना दोष के।

नारी के सर्वस्व समर्पण का अवमूल्यन
युगों-युगों तक
बना रहेगा राम निरन्तर।

कामुक इन्द्र करके प्रयोग अपनी छलना का,
हर युग में यूँ ही कर देंगे हमें तिरस्कृत।
इसीलिए इस श्रापमुक्ति के इस नाटक को
मैं करती हूँ बस अस्वीकृत ।

आज मुझे वर्षों से श्रापित शिलाखंड से,
अपने पग से मुक्त किया
तो गर्वित क्यों हो?
अगर शक्ति है तो दण्डित हों
दुष्ट इन्द्र सब,
नारी को भी मिले
पूर्ण सम्मान निरन्तर।

मत हो गर्वित राम
मुक्त कर मुझे शिला से।

धर्मेंद्र देव मिश्र

यादों की करवट

सुश्री धीरा खण्डेलवाल
भारतीय प्रशासनिक सेवा

अतीत की छत पे
यादों की खाट पे
अनकहे जज़्बात की धूप में
तपता मेरा मन
कविता की कालीन बिछाकर
इन्तज़ार करता है
तुम्हारे पदार्पण का

आओ
और मेरी क़लम से लिपट
इतना रोओ
कि सफ़ेद काग़ज़ पे उभर आयें
तुम्हारे हालात
अनकहे जज़्बात

पढ़कर जिन्हें
रुकें न मेरे आँसू
और धुल जाये
सद्यलिखित
तुम्हारी मजबूरियों की
अनकही कहानी

धीरा खंडेलवाल

मृत्यु ही है निश्चित

डॉ. धीरज जैन
भारतीय राजस्व सेवा

है अनिश्चित यह जगत् सारी व्यवस्था है अनिश्चित
सिर्फ़ विस्मय इस संसार में, एक मृत्यु ही है निश्चित

साँस की माला के कोई मनके गिन रहा
जीवन-पथ की राह पर कोई उठ रहा, कोई गिर रहा
यह हो रही गिनती प्रतिदिन, एक मृत्यु ही है निश्चित

व्यथा केवल यही, मृत्यु से पहले मृत्यु हो रही
नीन्द से जागे बिना, जीवनी यह सो रही
रह गये हम सब अपरिचित, एक मृत्यु ही है निश्चित

हित किसी का न किया, तो समझ यह मृत्यु है
परमार्थ में न जिया तो समझ यह मृत्यु है
ईर्ष्या-मृत्यु, द्वेष-मृत्यु; तुम बस मृतप्राय हो
दीनतों को छोड़ दिया तो समझ यह मृत्यु है
ये है मृत्यु रूप कलंकित, एक मृत्यु ही है निश्चित

ठान ले एक बात- मृत्यु पूर्व मरना नहीं
मनुज धर्म पालन हितार्थ खेद कुछ करना नहीं
शोक के अवशेष को अन्तिम चिता देनी हमें
इस अन्तिम चिता को देखकर और अब डरना नहीं
तब मिलेगा जीवन अकम्पित, एक मृत्यु ही है निश्चित

डॉ. धीरज जैन

धाकड़ कवि की कुण्डलियाँ

श्री हेमन्त कुमार
भारतीय रेल यांत्रिक इंजीनियर सेवा

भाषाई दंगल

भाषा बदले बीस पर, बोली चारहि कोस
किसको 'सूची' में रखें, कारण देकर ठोस?
कारण देकर ठोस, नहीं कुछ सूझे भाई
सूची की भाषाओं को क्या मिले मलाई?
कह 'धाकड़' कविराय, देखिये ग़ज़ब तमाशा।
भाषाई जब लड़ें, हारती है तब भाषा।।

अन्तः-संवाद

ख़ुद अपने से कीजिये, बातचीत निर्बाध
दिल-दिमाग़ के बीच में, बना रहे संवाद
बना रहे संवाद, फ़ैसले तभी कीजिये
उसकी ख़ातिर दिल की भी जब रज़ा लीजिये
कह 'धाकड़' कविराय, डरायेंगे ना सपने।
अगर सुनोगे सदा, सदा दिल की ख़ुद अपने।।

होली

होली में थी नायिका, हो ली पी के संग,
पी ली पी ने प्रेम की, आँखों से ही भंग।
आँखों से ही भंग, लगाया रंग गुलाबी,
टेसू और गुलाल, बनायें फ़िज़ा शराबी।
कह 'धाकड़' कविराय, नायिका पी से बोली
'प्रेम-रंग में डूब, आज मैं पी की हो ली'।।

हेमन्त कुमार

मुहब्बत की तरह

सुश्री नैना सौइन कपिल 'सहर'
भारतीय राजस्व सेवा

मेरे होंठों पे ठहर जा तू मुहब्बत की तरह
उम्र भर तुझको पढ़ूँ मैं किसी आयत की तरह

एक मुद्दत से तुझे ढूंढा है हर इक शय में
तेरे दर तक कभी पहुँचूँ मैं ज़ियारत की तरह

सिर्फ़ इक तू ही तो शामिल है अज़ल से मुझ में
हाथ सजदे में भी उठते हैं, रिवायत की तरह

इश्क़ में ये भी तो लाज़िम है, उतारो सदक़े
मशवरा लोग भी देते हैं, हिदायत की तरह

मेरे सजदों का तू हासिल है, तलब और नहीं
रब तुझे लिक्खे मुक़द्दर में इनायत की तरह

उम्र भर 'नैना सहर' एक तमन्ना ये रही
वो मुहब्बत भी कभी करता मुहब्बत की तरह

नैना सहर

दस्तक

सुश्री नीरजा भाटिया
ज़िला एवम् सत्र न्यायाधीश

वो जाने क्या दस्तक दे रहा था
एक ख़ामोश-सी गर्त में
सर्द-सी आवाज़, बस एक सिहरन देती
कुछ झनझना देती... छेड़ देती मुझको, हैरान कर देती...!

वो एक सफ़ेद-सी पैरहन में उलझा, ढका, बिखरा
कुछ अलसेटा-सा सिमट; हिलता डुलता...
एक मरहम देने की कोशिश करता
मगर आह देकर सिमट जाता

कुछ सुलझाने की कोशिश में
और कहीं गहरा उलझकर रह जाता
बस, एक नर्म-सी गश्त करता..
टोह लेता और छुप जाता
एक तीर भी हाथ न होकर ख़ंजर की तरह चुभ जाता...
कितनी बुझ चुकी यादों की बात करता..
मुस्कुराने को कहते-कहते आँखों को सुर्ख़ कर जाता...
फिर भी न बहकता, न महकता
और न ही ज़ुबान तक आता
क्या था... जो था ज़ेह्न की गर्त में दस्तक करता..
देखकर पाया
ख़ुद को गुम होने की साज़िश से बचाता
कुछ नहीं था
फ़क़त एक अहसास था...! नीरजा भाटिया

मन की परतें

श्री निशान्त जैन
भारतीय प्रशासनिक सेवा

लाल-लाल से बादल ऊपर
और नीचे धानी-सी चादर
दूर क्षितिज पर ढलता सूरज
क्या कहता है हौले-हौले
आओ मन की परतें खोलें!

जिनका जीवन है पहाड़-सा
पर चेहरों पर मुस्कानें हैं
उन मुस्कानों की मिठास को
आओ अपने संग संजो लें!
आओ मन की परतें खोलें!

मिट्टी की सोंधी ख़ुश्बू में
जीवन की हर महक बसी है
इस मिट्टी का क़तरा-क़तरा
लेकर जीवन में रस घोलें!
आओ मन की परतें खोलें!

रिश्तों की मीठी गरमाहट
अरमानों की नाजुक आहट
खोल के रख दें दिल की टीसें
मिलकर हँस लें, मिलकर रो लें!
आओ मन की परतें खोलें। निशान्त जैन

पहचान गुनगुना के मुझे

श्री पवन कुमार
भारतीय प्रशासनिक सेवा

किसी ने रखा है बाज़ार में सजा के मुझे
कोई ख़रीद ले क़ीमत मेरी चुका के मुझे

हैं मेरे लफ़्ज़ों को मुझसे मुनासिबत कितनी
मैं कैसा नग़मा हूँ, पहचान गुनगुना के मुझे

मैं ऐसी शाख़ हूँ, जिस पर न फूल-पत्ते हैं
तू देख लेता कभी काश मुस्कुरा के मुझे

कड़ी है धूप तो सूरज से क्या गिला कीजे
यहाँ तो चांद भी पेश आया तमतमा के मुझे

उसी की याद के बर्तन बनाये जाता हूँ
वही, जो छोड़ गया चाक पे घुमा के मुझे

उसे भी वक़्त कभी आईना दिखायेगा
वो आज ख़ुश है बहुत आईना दिखा के मुझे

क़सीदे पढ़ता हूँ मैं उसकी दिलनवाज़ी के
ज़लील करता है अक्सर जो घर बुला के मुझे

पवन कुमार

डायनासॉर की भारत यात्रा

श्री राजकुमार वर्मा
ज़िला न्यायाधीश

एक दिन एक डायनासॉर
हिन्दुस्तान आया
दिल्ली का संसद भवन देखा
तो उसका सिर चकराया
मन ही मन मुस्कुराकर बोला-
यार हम नाहक़ अपनी विशाल काया पर ऐंठे हैं
हम से बड़े-बड़े डायनासॉर तो
इस संसद में बैठे हैं।

कौन कहता है
कि डायनासॉर इस दुनिया में नहीं है
केवल शरीर मरा है,
आत्मा यहीं है।
मानवता इसीलिए तो शर्मिंदा है
हर देश में एक डायनासॉर ज़िन्दा है
हमारा ख़ून, कभी पाक, कभी चीन
और कभी अमेरिका की रग़ों में दौड़ता है,
और कभी तालिबान बनकर
बुद्ध की मूर्ति को तोड़ता है,
हैवानियत ने
यह कैसा तांडव कर डाला
इस अहिंसा के पुजारी को देखो

कैसे हिंसा से मार डाला
मिस्टर वर्मा हमारा दावा है
आप कभी चैन से सो नहीं सकते
दुनिया ख़त्म हो सकती है
मगर डायनासॉर ख़त्म नहीं हो सकते।"

हमने कहा- सरजी,
आप हिन्दुस्तान पहली बार आये हैं,
क्या देखना पसंद करेंगे, ताजमहल?
अब आपको देख लिया
तो ताजमहल देखकर क्या करेंगे,
आप भी तो
मोहनजोदड़ो की खुदाई में निकले हैं,
चेहरा सफ़ेद और आँखें नम हैं,
आप किस डायनासॉर से कम हैं,
आप से बड़ा एहसान-फ़रामोश कौन होगा,
जिन शिल्प्यिों ने ताजमहल बनाया है,
उनकी क़ब्र पर
कब किसने दीया जलाया है,
कला और संस्कृति की दुनिया में,
आज भी सन्नाटे हैं,
तुमने ताजमहल बनाकर
उन बेचारों के हाथ काटे हैं।
हम जानवर होकर भी
ईमान के सच्चे हैं,
तुम भ्रष्टाचारियों से तो लाख गुना अच्छे हैं,
तुमने भ्रष्टाचार के साँप को दूध पिलाया
उसने ऐसा डसा
कि तुम्हें आज तक होश नहीं आया
तुमने सपेरा बनकर बीन बजायी,
अख़बारों ने लाख शोर मचाया
मगर आज तक
एक भी भ्रष्टाचारी साँप
पकड़ में नहीं आया

अजीब देश है तुम्हारा
ग़ुलामी से बचे तो जातिवाद ने मारा
दुनिया में ऐसा भेदभाव देखा है कहीं,
तुम्हारे किचिन में कुत्ता जा सकता है
मगर आदमी नहीं

तुम भी पुजारी और पंडों की चालों में फँस गये
तुम्हीं ने मंदिर बनाये
और तुम ही देवता के दर्शन को तरस गये
तुमने ईश्वर के सामने भी झूठ बोला,
सांप्रदायिकता का ज़हर ऐसा घोला
न तो गीता काम आयी न ही क़ुरआन
न तो हिन्दू, हिन्दू रहा न मुसलमान
कोई सिख, कोई ईसाई बनकर जिया
मगर हमें अपने आप पर भी गर्व है
कि किसी डायनासॉर ने
डायनोसॉर का ख़ून नहीं पिया

हमने कहा सर जी,
आप हिन्दुस्तान अकेले आये हैं,
बोला नहीं बेटा,
हम विदेशी कंपनियों को भी साथ लाये हैं,
जो चमड़ी के विज्ञापन से भी पैसा कमाती है,
वरना सुंदरता हमारे यहाँ क्या कम है,
सैक्स के बड़े-बड़े एटम बम हमारे पास हैं
जो अगर फटे तो धरती हिल जाये,
तुम्हारी सारी सुंदरता मिट्टी में मिल जाये,
हिन्दुस्तान वालो
इन विदेशी कंपनियों से सावधान रहना
वरना ग़ुलामों की तरह
बाज़ार में नहीं बिको तो हमसे कहना,
ऐसा कहकर वह जाने लगा,
मुझे डायनासॉर, डायनासॉर नहीं
अमेरिका नज़र आने लगा। राजकुमार वर्मा

चांद पे चिट्ठी

डॉ. राजश्री सिंह
भारतीय पुलिस सेवा

मैंने चांद पे चिट्ठी लिखी है
तुम उसको ज़रूर पढ़ लेना
मैं कल तक राह तकूंगी
तुम उसका जवाब लिख देना

बेचैन निगाहें उलझी हैं चांद से
तुम भी उसका दीदार कर लेना
मैंने जो-जो पूछा है तुमसे
तुम उसका जवाब लिख देना

जो उदास है चंदा का चेहरा
मैंने तुमको याद किया, समझ लेना
एक हँसी का छोटा-सा टुकड़ा
उस जवाब में तुम लिख देना

याद आते हो बहुत, आँखे भीगी जाती हैं
हम तुमको न भूलें, तुम हमको न भूलो
पल भर को ही आराम मिले, ऐसा कोई जतन
तुम उस जवाब में लिख देना

मैं रोज़ चांद निहारूंगी
तुम भी दीदार कर लेना
दिल कोई बेचैन है -ये जान के; मीठी बातें
तुम उस जवाब में लिख देना ! राजश्री सिंह

तृप्ति

श्री रमेश यादव
भारतीय राजस्व सेवा

मैं तुम्हें कविता बनाना चाहता हूँ
शब्द की सँकरी गुफ़ाओं से निकल
मौन में ही तृप्ति पाना चाहता हूँ

किन्तु अधरों ने तुम्हारे जब कहा, मौन में क्या तृप्ति का सामर्थ है
अब नहीं ख़ुद को छला जाता है ख़ुद से, पूछता हूँ तृप्ति का क्या अर्थ है
नीर की सी भावना की डोर में बंधकर
क्या सरित का कूल बनना चाहता हूँ

वर्जनाओं की परिधि को लांघकर, बुद्धि के वर्चस्व का प्रतिकार कर
पा सकूँ मैं तृप्ति की सौग़ात तुमसे, जगत् की दुर्जन निगाहों से बचाकर
रात्रि के नीरव प्रहर में ज़िन्दगी की लघु तरणि को
हृदय के मझधार में ही छोड़ देना चाहता हूँ

जानता हूँ तुम महज वह बिन्दु हो, दृष्टि जिस पर थी क्षणिक उन्माद की
किन्तु यदि हम सत्य को गाली न दें, चरम परिणति है वही आह्लाद की
इसलिए ही तृप्ति को स्वप्निल समझकर
मौन में ही तृप्ति पाना चाहता हूँ
मैं तुम्हें कविता बनाना चाहता हूँ

रमेश यादव

कोयला खनिक

डॉ. संजय अलंग
भारतीय प्रशासनिक सेवा

सिर पर लगी कड़ी टोपी में
जलते प्रकाश के साथ
लम्बे जूते पहने हुए
टटोलते खुदी सीम की दीवार को
अन्दर तक धँसते जाते
करने को काम, कमाने को दाम

अभी वे सचेत करने को एक-दूसरे को
बजाएंगे सीटी और
रख एक ओर कुदाली
सुस्ताने को लेंगें गहरी साँस
फेफड़ो में भर जायेगी काली धूल
वही धूल जब खुदकर जायेगी बाहर
बन जायेगी सोना
लादी जायेगी लोको और डम्फरों में
दूर तक जाने के लिये

खनिक पीछे ही रहेगा
बोझ साझा करने के लिये एक-दूसरे का
जिससे ही बना है
प्रगाढ़ रिश्ता उनका एक-दूसरे से
जो निकला है
हाड़-तोड़ मेहनत से
पसीने में गुँथा हुआ

संजय अलंग

कल आज और कल

श्री संजीव जैन
ज़िला न्यायाधीश

कल की यादें कल के सपने उलझ गये तो ग़म ही ग़म हैं
जीने को इक पल भी क़ाफ़ी मरने को सदियाँ भी कम हैं

जीवन अगर अतीत में होता शमशानों में होली सजती
अगर स्मृतियाँ जीवित होतीं क़ब्रों पर फिर ईद भी मनती
बीता कल दीवार किसी पर हार से सज्जित चित्र है कोई
अगर चित्र ही जीवित होते क्या फिर श्राद्ध की थाली सजती
भूली-बिसरी कल की बातें पर आँखें क्यों व्यर्थ ही नम हैं
जीने को इक पल भी क़ाफ़ी मरने को सदियाँ भी कम हैं

बून्द-बून्द ही प्यास बुझाती नदिया बस बहती जाती
क़दम-क़दम बस चले ज़िन्दगी राहें हाथ नहीं आतीं
जीवन सालों की गिनती में जमा-घटा का खेल नहीं है
इस पल जीवन हाथ में अपने सदियाँ हाथ नहीं आतीं
साँस-साँस का पल-पल रिश्ता, जीवन क्या इतना भी कम है
जीने को इक पल भी क़ाफ़ी मरने को सदियाँ भी कम हैं

दुनिया के उस पार खोजने जीवन भी तो ख़ूब गये सब
बीते कल से जो भी उलझे वर्तमान से ऊब गये सब
उलझे रहना बीते कल में मकड़जाल है इस जीवन का
घनी धुंध की झील में कंकड़ जितने फेंके डूब गये सब
वीरों की ख़ातिर वसुन्धरा किस पल किसी स्वर्ग से कम है
जीने को इक पल भी क़ाफ़ी मरने को सदियाँ भी कम हैं।

संजीव जैन

ख़तरा

श्री शैलेश कुमार
भारतीय राजस्व सेवा

बचपन में
आप दोस्तों के होते हैं
जवानी में
जीवनसाथी और बाल-बच्चों के
नौकरी में
आप करते है चाकरी
घूमते हैं दर-ब-दर
बढ़ता जाता है दायरा
रोज़-रोज़
कश्मीर से कन्याकुमारी
और अटक से कटक तक
घूमते-घूमते बदल जाती है कई चीज़ें
मसलन,
आप फ़ुरसत में होकर भी
फ़ुरसत से नहीं होते
घर में होकर भी
घर के नहीं होते
सारी दुनिया के होने का ख़तरा यही है
कि आप
कहीं के
या किसी के नहीं होते!

शैलेश कुमार सिंह

मैं क्यूँ बदलूँ?

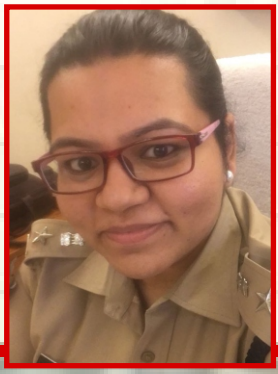

सुश्री तेजस्वनी गौतम
भारतीय पुलिस सेवा

मेरी सूरत,
मेरी सीरत
तेरे हिसाब से
मैं क्यूँ बदलूँ?

मेरी अदा,
मेरी बोली
तुझे रिझाने को
मैं क्यूँ बदलूँ?

वो ख़ाकी जितनी तेरी है
मेरी भी
फिर मैं क्यूँ बदलूँ?

तू हीरा ख़ाकी का
मैं उस पर बोझ
-इस स्वीकृति को
मैं क्यूँ तरसूँ?

लम्बे बाल पसन्द हैं मुझे
तेरी तरह छोटे-छोटे बाल
मैं क्यूँ रखूँ?

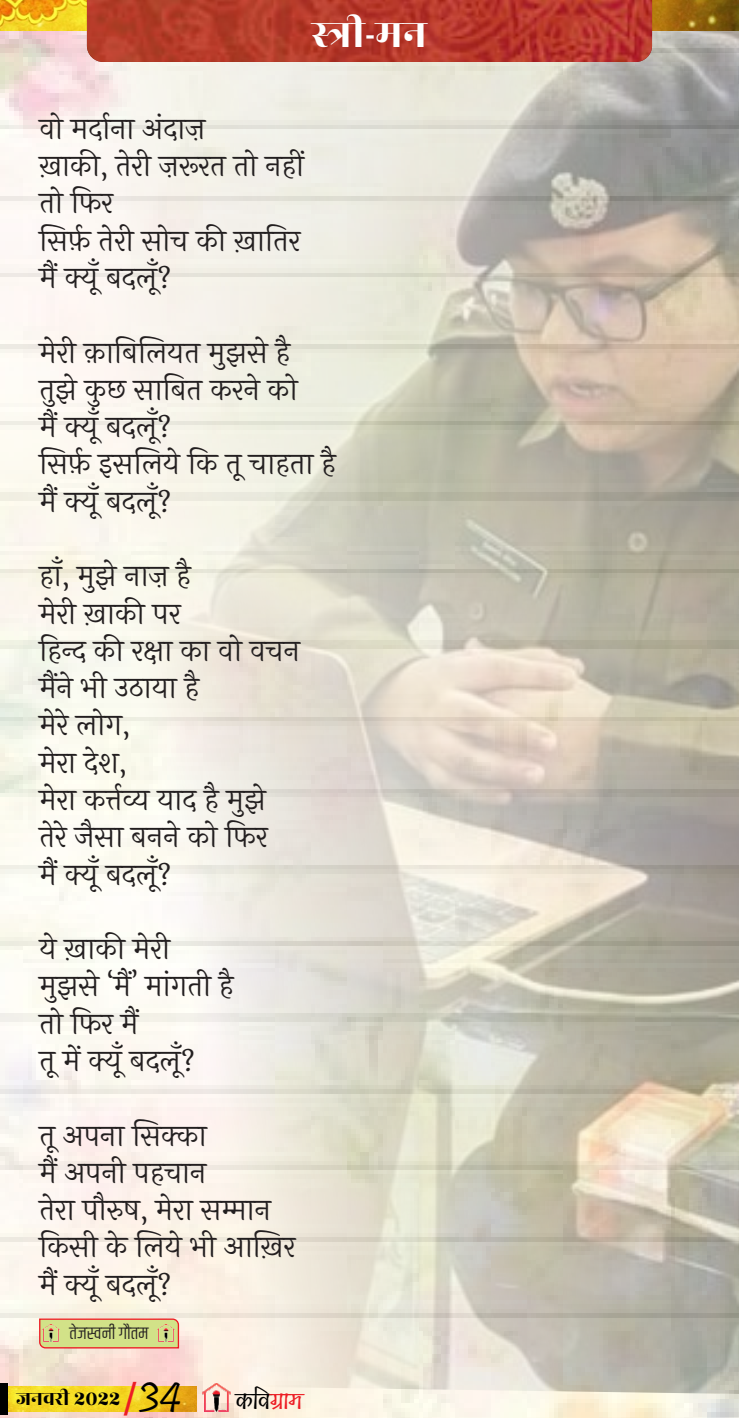

वो मर्दाना अंदाज़
ख़ाकी, तेरी ज़रूरत तो नहीं
तो फिर
सिर्फ़ तेरी सोच की ख़ातिर
मैं क्यूँ बदलूँ?

मेरी क़ाबिलियत मुझसे है
तुझे कुछ साबित करने को
मैं क्यूँ बदलूँ?
सिर्फ़ इसलिये कि तू चाहता है
मैं क्यूँ बदलूँ?

हाँ, मुझे नाज़ है
मेरी ख़ाकी पर
हिन्द की रक्षा का वो वचन
मैंने भी उठाया है
मेरे लोग,
मेरा देश,
मेरा कर्त्तव्य याद है मुझे
तेरे जैसा बनने को फिर
मैं क्यूँ बदलूँ?

ये ख़ाकी मेरी
मुझसे 'मैं' मांगती है
तो फिर मैं
तू में क्यूँ बदलूँ?

तू अपना सिक्का
मैं अपनी पहचान
तेरा पौरुष, मेरा सम्मान
किसी के लिये भी आख़िर
मैं क्यूँ बदलूँ?

तेजस्वनी गौतम

श्री वीरेन्द्र गोयल
अतिरिक्त ज़िला एवम् सत्र न्यायाधीश

सबके हिस्से का

चली आती हैं चीटियाँ
दरारों से चुपके से
कुत्ते, पूँछ हिलाते हुए
कानों को दबाते हुए
कौवे, शोर मचाते हुए
तुम्हारे कान खाते हुए
बन्दर, उद्दण्डता से
रास्ते की हर चीज़ को हिलाते हुए
चले आते हैं तुम्हारी दुनिया में।

जहाँ तुमने अतिक्रमण किया है
विस्थापित किया है इन सबको
चले आते हैं
कैसे भी तुम्हारे द्वार
जो तुम खा रहे हो,
उसके हिस्से के लिये।

अभी तो गाय बची है
जो गन्दगी खाकर भी
तुम्हें पाल रही है।

कब तुम रहना सीखोगे
औरों से संतुलन बनाकर
या बाक़ी सभी प्रजातियों से
आगे निकल जाओगे

क्या हर पर्वत, पहाड़,
नदी, सागर, झरने,
जंगल, बाग़-बगीचों पर छा जाओगे
क्या फिर कुछ मनुष्यों को
चींटी, कुत्ता, कौवा, बन्दर बनाओगे
फिर चिड़ियाघर में सजाओगे
भावी पीढ़ियों को दिखा-दिखाकर
गर्व से इतिहास बताओगे?

वीरेन्द्र गोयल

कवि कुनबा कलैण्डर (जनवरी)

1 जनवरी	जयन्ती	डॉ. ब्रजेन्द्र अवस्थी
	जयन्ती	डॉ. राहत इन्दौरी
	जन्मदिन	जमना प्रसाद उपाध्याय
	जन्मदिन	लक्ष्मीदत्त तरुण
	जन्मदिन	महेन्द्र अजनबी
	जन्मदिन	गीतेश्वर बाबू घायल
	जन्मदिन	डॉ. सुनील जोगी
	जन्मदिन	डॉ. अर्जुन सिंह चांद
	पुण्यतिथि	सुरेन्द्र दुबे
	पुण्यतिथि	दिव्या दुबे नेह
2 जनवरी	जन्मदिन	डॉ. सरोज कुमार
	जन्मदिन	सविता असीम
	जन्मदिन	पंकज प्रसून
	पुण्यतिथि	अनवर जलालपुरी
3 जनवरी	जन्मदिन	बागेश्री चक्रधर
	जन्मदिन	डॉ. रुचि चतुर्वेदी
4 जनवरी	जयन्ती	गोपालदास नीरज
	जन्मदिन	साजन ग्वालियरी
5 जनवरी	पुण्यतिथि	रमेश बाँसुरी
	जन्मदिन	मासूम ग़ाज़ियाबादी
	जन्मदिन	विकास बौखल
6 जनवरी	जयन्ती	भरत व्यास
	जयन्ती	श्रवण राही
	जन्मदिन	प्रेरणा कौशिक
7 जनवरी	जयन्ती	प्रताप दीक्षित
8 जनवरी	जयन्ती	कैलाश गौतम
	जयन्ती	लाजपत राय विकट
	जन्मदिन	डॉ. हरीश नवल
	जन्मदिन	डॉ. सुरेन्द्र दुबे
	पुण्यतिथि	किशन सरोज

कवि कुनबा कलैण्डर (जनवरी)

9 जनवरी	जन्मदिन	बलजीत कौर तन्हा
10 जनवरी	जन्मदिन	डॉ. लक्ष्मीशंकर वाजपेयी
	जन्मदिन	शम्भू शिखर
	पुण्यतिथि	गिरिजाकुमार माथुर
11 जनवरी	जन्मदिन	डॉ. कृष्णकांत मधुर
	जन्मदिन	नन्दिनी श्रीवास्तव
12 जनवरी	जन्मदिन	डॉ. विष्णु सक्सेना
	जन्मदिन	हरमिन्दर पाल
13 जनवरी	जन्मदिन	सपना सोनी
17 जनवरी	जन्मदिन	माया गोविन्द
	जन्मदिन	अशोक टाटम्बरी
18 जनवरी	जन्मदिन	प्रकाश प्रलय
	पुण्यतिथि	डॉ. हरिवंश राय बच्चन
21 जनवरी	जन्मदिन	सतीश मधुप
22 जनवरी	जयन्ती	देवराज दिनेश
	पुण्यतिथि	डॉ. ब्रजेन्द्र अवस्थी
25 जनवरी	जयन्ती	ताराप्रकाश जोशी
	जन्मदिन	रासबिहारी गौड़
	जन्मदिन	शालिनी सरगम
	पुण्यतिथि	रामस्वरूप सिन्दूर
	पुण्यतिथि	नरेन्द्र दाधीचि
29 जनवरी	जयन्ती	किशन सरोज
	जन्मदिन	रमेश मुस्कान
30 जनवरी	जयन्ती	जयशंकर प्रसाद
	जन्मदिन	पद्म अलबेला
	जन्मदिन	कमल आग्नेय
	पुण्यतिथि	माखनलाल चतुर्वेदी
31 जनवरी	जयन्ती	प्रमोद तिवारी

KAVIGRAM

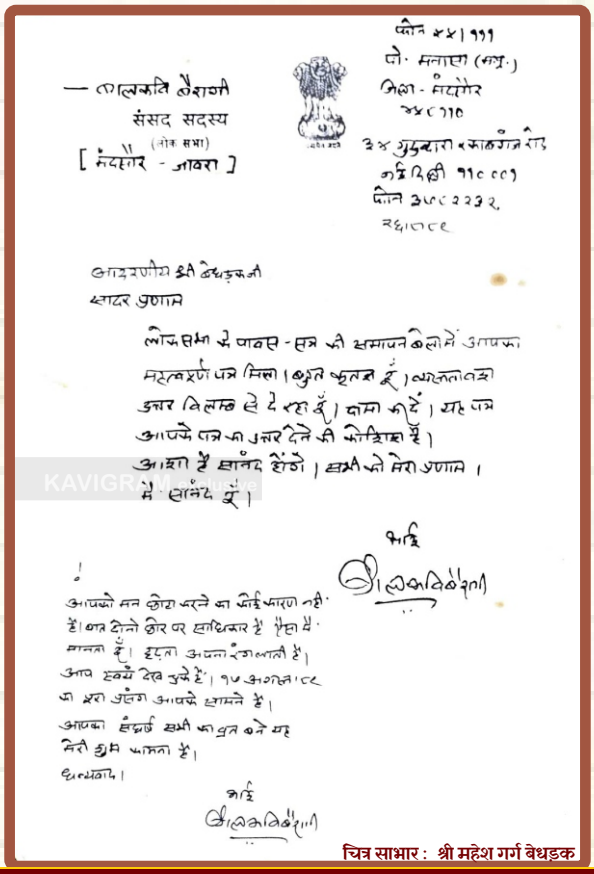

— बालकवि बैरागी
संसद सदस्य
(लोक सभा)
[मंदसौर - जावरा]

फोन ४४।१११
पो. मनासा (म.प्र.)
जिला - मंदसौर
४५८११०
३४ गुरुद्वारा रकाबगंज रोड
नई दिल्ली ११०००१
फोन ३७८२२३२
२६।१०।८९

आदरणीय श्री बेधड़कजी
सादर प्रणाम

लोकसभा के पावस-सत्र की समापन बेला में आपका महत्वपूर्ण पत्र मिला। बहुत कृतज्ञ हूँ। व्यस्ततावश उत्तर विलम्ब से दे रहा हूँ। क्षमा करें। यह पत्र आपके पत्र का उत्तर देने की कोशिश है। आशा है सानंद होंगे। सभी को मेरा प्रणाम। मैं सानंद हूँ।

भवदीय
बालकवि बैरागी

!
आपको मन छोटा करने का कोई कारण नहीं है। बात दोनों ओर पर साधिकार है ऐसा मैं मानता हूँ। इतना अपना रंग लाती है। आप स्वयं देख चुके हैं। १५ अगस्त ८८ का पूरा प्रसंग आपके सामने है। आपका संघर्ष सभी का पुत्र बने यह मेरी शुभ कामना है। धन्यवाद।

भवदीय
बालकवि बैरागी

KAVIGRAM exclusive

चित्र साभार : श्री महेश गर्ग बेधड़क

1989 में श्री महेश गर्ग 'बेधड़क' के नाम श्री बालकवि 'बैरागी' का पत्र

कवि-सम्मेलन संग्रहालय में कवि-सम्मेलन के पुराने चित्र, निमन्त्रण पत्र, चिट्ठियाँ, कतरनें तथा अन्य दस्तावेजों को संग्रहीत करने का कार्य प्रगति पर है। दाहिनी ओर दिये गये लिंक पर स्पर्श करके आप इस खण्ड के अन्य चित्र देख सकते हैं

कवि सम्मेलन संग्रहालय

कहाँ से लाऊँ सिलसिलेवारिता

प्रो. अशोक चक्रधर

भाग 3

भारतीय मध्य वर्ग ने रंगीन टीवी के साथ वीसीआर भी ख़रीदना शुरू कर दिया था, बात उस ज़माने की चल रही है। जगह-जगह वीडियो लाइब्रेरी खुल गई थीं। लोग किराये पर फिल्में लाते थे और घर पर पैर फैलाकर ठाठ से देखा करते थे। सिनेमाघर धीरे-धीरे बंद होने लगे थे और लगने लगा था कि अब ये फिर से शायद कभी खुल भी नहीं पाएंगे। वीसीआर नामक उपकरण ने दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले मनचाहे कार्यक्रमों को रिकॉर्ड करने की चमत्कारी सुविधा प्रदान कर दी थी। रिकॉर्ड करने पर कोई अपराधबोध भी नहीं होता था कि हम पायरेसी या कॉपीराइट उल्लंघन जैसा कोई ग़लत काम कर रहे हैं। पंद्रह-बीस हज़ार रुपए देकर जब वीसीआर ख़रीदा है तो टेप भी नहीं करेंगे क्या? बोलिए!!!

चौरासी में मैंने दूरदर्शन के एक हास्य कवि-सम्मेलन का संचालन किया था। उस कवि-सम्मेलन में 'बियर नहीं पिऊंगा' शीर्षक की एक कविता सुनाई थी। संयोग से कविता जम गई और संचालन भी। उस कार्यक्रम के ख़ूब कैसेट्स बने, लोगों ने बारम्बार देखा। वीडियो लाइब्रेरी धड़ल्ले से कैसेट्स किराए पर देती थीं। सब कुछ खुले-आम था पर दूरदर्शन ने किसी पर कोई मुक़द्दमा नहीं किया। कॉपीराइट क्या होता है, अपने देश में अघोषित 'राइट टू कॉपी' था।

बहरहाल..., वैसे तो मैं 1967 से आकाशवाणी पर और 1973 से दूरदर्शन पर आने लगा था, लेकिन चौरासी के उस दूरदर्शन कवि सम्मेलन ने मुझे रातोंरात स्टार बना दिया। मैं देश भर का लाड़ला कवि बन गया। कुछ कविता-प्रेमियों ने कैसेट्स विदेशों में स्थित अपने मित्रों रिश्तेदारों को भेजे। सो मैं बिना पासपोर्ट के ही अपने दृश्य-श्रव्य रूप में प्रवासी भारतीयों तक पहुँच गया।

उधर 16 अगस्त 1984 को काका जी, तरुण जी के साथ अमेरिका निकल चुके थे। वे लगभग तीन महीने तक अमरीका, कनाडा और ब्रिटेन में रहे। उनके अमरीका से पत्र आने लगे। डॉ. तरुण के साथ वे ख़ुश थे। हर पत्र में काकू मुझे बताते थे कि उन्होंने कितने लोगों को मेरा नाम दिया है। उनमें प्रमुख थे श्री हरिबाबू बिंदल थे, जो स्वयं कवि तो थे ही, ब्रजवासी भी थे। उनके माध्यम से काकू की वहां अनेक गोष्ठियां हुईं । ये गोष्ठियां या तो किसी के विराट घर में होती थीं या फिर किसी विद्यालय अथवा किसी मंदिर के प्रांगण में। जहां जाते थे, लोगों को अपनी प्रसिद्ध कविताओं के साथ वहां की आवश्यकता के अनुसार नए-नए छक्के गढ़ देते थे।

आवास अथवा स्थानीय यातायात में उन्हें कभी कोई असुविधा नहीं हुई। सब उनका आदर करते थे, उनसे प्यार करते थे। भारत के सबसे लोकप्रिय कवि को कौन न अपने घर में आतिथ्य देना पसंद करता। जिन लोगों के बीच रहे, वे भी इस कवि-युगल से ख़ुश थे।

काका आस्तिक तो थे, लेकिन घनघोर धार्मिक नहीं थे। एक पत्र में उन्होंने लिखा कि डंडास शहर के 'हिंदू समाज ऑफ़ हेमिल्टन' में एक सांस्कृतिक कार्यक्रम में उनका एक तत्काल लिखा हुआ एक छक्का सुनकर लोग बहुत अभिभूत हुए। छंद इस प्रकार था—

आए हिंदू सभा में; देखी भक्ति अनन्य,
दर्शन मंदिर में किये, तन-मन जीवन धन्य
तन-मन जीवन धन्य, धर्म में कला मिलाएं
भरत मिलाप, भरतनाट्यम् संग-संग दिखलाएं।
सभी भारती मित्र निभाते हैं अनुशासन,
इस उत्सव का काका करते हैं उद्घाटन।

काका जी भी अमेरिका के आयोजकों को मेरा नाम-पता दे आए थे, परिणामत: मेरे पास अमेरिका से न्योते आने लगे। सबसे पहले किसने बुलाया, यह तो मुझे याद नहीं है पर इतना याद है कि 1984 में ही टेलीफोन पर एक अनौपचारिक निमंत्रण पाने के बाद मैंने अपने पासपोर्ट के लिए आवेदन किया था। निमंत्रण 1987 तक निरंतर आते रहे। उनके बारे में सिलसिलेवार बताने का मन है, किंतु कहां से लाऊं सिलसिलेवारिता? आगे-पीछे हो जाएंगी, लेकिन बताऊंगा सारी बातें।

तो, दोस्तो! उत्कट अभिलाषा और उत्साह के बावजूद मैं अमेरिका जा नहीं पाया क्योंकि दूरदर्शन की एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम-योजना में

शरीक था और वह कार्यक्रम था 'अपना उत्सव'। 'अपना उत्सव' स्व. राजीव गांधी की सांस्कृतिक समझ से पैदा हुआ एक सौंधा-सा सांस्कृतिक संकल्प था, जो प्रिंट-मीडिया की वजह से औंधा हो गया। ये वो दिन थे जब राजीव गांधी अपनी लोकप्रियता और छवि की रक्षा करने के लिए जूझ रहे थे। दूरदर्शन पर उनको बहुत अधिक दिखाना उनके विरुद्ध जा रहा था। अख़बारों ने 'अपना उत्सव' की धज्जियां उड़ा दीं। आरोप यह लगाया कि जिस समय देश बेकारी भुखमरी और महंगाई से जूझ रहा है, देश के आक़ाओं को नाच-गाना सूझ रहा है। सरकारी ढोल बजाया जा रहा है। पैसा पानी की तरह बहाया जा रहा है। दूरदर्शन ने 'अपना उत्सव' के कार्यक्रमों को निष्ठापूर्वक कवर किया।

मैं उसमें मुख्य हिंदी एंकर के रूप में अपनी पूरी समझदारी के साथ लगा रहा। लोगों ने 'अपना उत्सव' के कार्यक्रमों को पसंद किया पर प्रेस ख़फ़ा रही। मेरे कुछ श्रोता भी मुझसे नाराज़ हो गए। प्रशंसा के अनेक पत्रों के बीच कहीं-कहीं कटाक्ष का स्वर भी होता था- 'भ्रष्टाचार के ख़िलाफ कविताएं लिखनेवाले हे अशोक चक्रधर, तुम सत्ता के चाटुकारों की कतार में कैसे खड़े हो गए?' ऐसी कटूक्तियों से भरे पत्र पढ़कर दिल छलनी हो जाता था और मन में ख़्याल आता था कि अच्छा होता अमेरिका ही चले गए होते।

अमेरिका से अगला न्योता मिला 1987 में, पर यहां मेरे सामने फिर एक विकल्प था। दूरदर्शन की तरफ से सोवियत संघ में भारत महोत्सव का आंखों देखा हाल सुनाने के लिए जो चार लोग चुने गए थे, मैं भी उनमें से एक था। अंग्रेज़ी में हाल सुनाने के लिए राजीव मल्होत्रा और कोमल जी बी सिंह और हिन्दी के लिए स्व. विनोद दुआ और मैं।

हुआ यों कि 'अपना उत्सव' को दूरदर्शन द्वारा सफलतापूर्वक संपन्न किए जाने के बाद उन लोगों को एक पार्टी दी गई, जिन्होंने कार्यक्रमों की प्रस्तुति अथवा निर्माण में मेहनत की थी, जिनके श्रम से दूरदर्शन के आला अधिकारी प्रसन्न थे और बताया गया कि राजीव जी भी खुश थे। महानिदेशक भास्कर घोष शायद राजीव जी से अकेले शाबासी ले रहे थे, इसलिए पार्टी में नहीं आ पाए, लेकिन अतिरिक्त महानिदेशक शिव शर्मा और ए. एस. गिरेवाल इस भोज में मुख्य मेज़बान की भूमिका निभा रहे थे। शर्मा जी ने मेरी प्रशंसा करते हुए कहा- 'मैंने 'अपना उत्सव' की काफी कवरेज देखी अशोक! तुमने एक प्रोफेशनल की तरह अच्छा काम किया। सोवियत संघ में 'भारत महोत्सव' होने जा रहा है। मैं चाहता

हूं कि तुम उसमें चलो। बोलो चलोगे?' मैं उनसे कहने ही वाला था कि मैं तो अमेरिका जा रहा हूं, पर पता नहीं किस आंतरिक शक्ति ने मुझे रोक लिया। मन में अंतर्द्वंद्व चल रहा था। कवि-सम्मेलन का क्या है? वही पुरानी कविताएं सुनानी होंगी, तालियां बजवानी होंगी, लेकिन लाइव टेलीकास्ट का ये चुनौती भरा काम दिव्य होगा। मेरे लिए यह काम नया तो नहीं, पर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहला होगा। मैंने शर्मा जी से कहा- 'ज़रूर चलना चाहूंगा सर! मुझे बेहद ख़ुशी होगी'।

शर्मा जी दूसरे लोगों की ओर मुख़ातिब हो गए। मैं फ़िल्म संपादक सरीन साहब की ओर मुड़ा। सरीन साहब को अपना अंतर्द्वन्द्व बताया। उन्होंने राय दी- 'अगर आपके पास पक्का इनविटेशन है तो अमेरिका जाइए, पैसे कमाइए, दूरदर्शन आपको क्या देगा?' मन फिर डांवांडोल होने लगा। अमेरिका मेरे अंदर पुरज़ोर अंगड़ाई लेने लगा। अब मैं सोचने के लिए थोड़ा समय चाहता था। सरीन साहब ने अचानक एक सवाल दागा- 'यूनिवर्सिटी से आपको आराम से छुट्टी मिल जाती हैं?'

अरे, ये बात तो अभी तक सोची ही नहीं थी कि जामिया से अनुमति लेनी पड़ेगी। इस प्रश्न ने सोवियत संघ का पलड़ा भारी कर दिया। पार्टी से विदाई के समय मैंने शर्मा जी से कहा- 'आप तो जानते हैं कि मैं नौकरी करता हूं, मुझे अपने वाइसचांसलर से अनुमति लेनी पड़ेगी।' उन्होंने कहा- 'उसकी फिकर मत करो। मैं पत्र लिख दूंगा'।

एक सप्ताह के अंदर दूरदर्शन से चिट्ठी वाइस चांसलर के यहां पहुंच गई। प्रोफ़ेसर अशरफ़ अली ने मुझे बुलाया- 'मुबारक हो अशोक! ये जामिया के लिए बड़े फ़ख़्र की बात है कि दूरदर्शन आपको सोवियत संघ में मॉस्को भेजना चाहता है'। विदेश यात्रा सचमुच गौरव की बात हुआ करती थी। वे सचमुच ख़ुश थे।

चिट्ठी दिखाते हुए कहने लगे- 'हालांकि वो लोग आपको सिर्फ सात जुलाई तक ही चाहते हैं, पर मैं कहूंगा कि आप और ज़्यादा रह कर आइए। लेनिनग्राद जाइए, साइबेरिया तक घूमकर आइए। हमारी तरफ से आपको पूरी आज़ादी है, लेकिन अगस्त में नया सैशन शुरू हो, उससे पहले आ जाइएगा।

मैंने कृतज्ञता में कहा- 'जी ज़रूर, बहुत-बहुत शुक्रिया'!

और इस तरह फ़्लाइट अमेरिका जाते-जाते सोवियत संघ की ओर मुड़ गई। अशोक चक्रधर (शेष अगले अंक में)

नीर भरी दुःख की गगरी महादेवी वर्मा

डॉ. सोनरूपा विशाल

भाग 2

महीयसी महादेवी वर्मा से साहित्य में रुचि न रखने वाले लोग भी अपरिचित नहीं होंगे -ऐसा मेरा ही विश्वास है। हिन्दी साहित्य की प्रातिभ कवयित्री महादेवी वर्मा हिन्दी साहित्य में छायावादी युग के चार प्रमुख स्तम्भों में से एक मानी जाती हैं। आधुनिक हिन्दी की सबसे सशक्त कवयित्रियों में से एक होने के कारण उन्हें आधुनिक मीरा के नाम से भी जाना जाता है। कवि निराला ने उन्हें "हिन्दी के विशाल मन्दिर की सरस्वती" भी कहा है।महादेवी ने स्वतन्त्रता के पहले का भारत भी देखा और उसके बाद का भी। वे उन रचनाकारों में से एक हैं जिन्होंने समाज में व्यापकता से काम करते हुए भारत के भीतर विद्यमान हाहाकार, रुदन को देखा-परखा और चेतनामयी होकर अन्धकार को दूर करनेवाली दृष्टि देने की कोशिश की।

न केवल उनका काव्य बल्कि उनके समाज-सुधार के कार्य और महिलाओं के लिए प्रेरक क़दम भी उल्लेखनीय हैं। उन्होंने मन की पीड़ा को इतने स्नेह और शृंगार से सजाया कि उनकी कृति दीपशिखा में वह जन-जन की पीड़ा के रूप में स्थापित हुई। दीपशिखा ने केवल पाठकों को ही नहीं बल्कि समीक्षकों को भी गहराई तक प्रभावित किया। उन्होंने खड़ीबोली हिन्दी की कविता में उस कोमल शब्दावली का विकास किया जो अभी तक केवल बृजभाषा में ही संभव मानी जाती थी। इसके लिए उन्होंने अपने समय के अनुकूल संस्कृत और बांग्ला के कोमल शब्दों को चुनकर हिन्दी का जामा पहनाया। संगीत की जानकार होने के कारण उनके गीतों का नाद-सौंदर्य और पैनी उक्तियों की व्यंजना शैली अन्यत्र दुर्लभ है। उन्होंने अध्यापन से अपने कार्यजीवन की शुरूआत की और अन्तिम समय तक वे प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्या बनी रहीं।

उनका बाल-विवाह हुआ परन्तु उन्होंने अविवाहिता की भाँति जीवन-यापन किया। प्रतिभावान कवयित्री और गद्य लेखिका महादेवी वर्मा साहित्य और संगीत में निपुण होने के साथ-साथ कुशल चित्रकार और सृजनात्मक अनुवादक भी थीं। उन्हें हिन्दी साहित्य के सभी महत्त्वपूर्ण पुरस्कार प्राप्त करने का गौरव प्राप्त है। भारत के साहित्य आकाश में महादेवी वर्मा का नाम ध्रुव तारे की भाँति प्रकाशमान है। गत शताब्दी की सर्वाधिक लोकप्रिय महिला साहित्यकार के रूप में वे जीवन भर पूज्य बनी रहीं।

वर्ष 2007 उनकी जन्म शताब्दी के रूप में मनाया गया। 27 अप्रैल 1982 को भारतीय साहित्य में अतुलनीय योगदान के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से इन्हें सम्मानित किया गया था। गूगल ने इस दिवस की याद में वर्ष 2018 में गूगल-डूडल के माध्यम से मनाया ।

महादेवी वर्मा का जन्म 26 मार्च 1907 को प्रातः 8 बजे फ़र्रुख़ाबाद उत्तर प्रदेश, भारत में हुआ। उनके परिवार में लगभग 200 वर्षों या सात पीढ़ियों के बाद पहली बार पुत्री का जन्म हुआ था। अतः बाबा, बाबू बाँके विहारी जी हर्ष से झूम उठे और इन्हें घर की देवी — महादेवी मानते हुए पुत्री का नाम महादेवी रखा। उनके पिता श्री गोविंद प्रसाद वर्मा भागलपुर के एक कॉलेज में प्राध्यापक थे। उनकी माता का नाम हेमरानी देवी था। महादेवी वर्मा के मानस बंधुओं में सुमित्रानन्दन पन्त एवं निराला का नाम लिया जा सकता है, जो उनसे जीवन पर्यन्त राखी बँधवाते रहे। निराला जी से उनकी अत्यधिक निकटता थी, उनकी पुष्ट कलाइयों में महादेवी जी लगभग चालीस वर्षों तक राखी बाँधती रहीं।

महादेवी जी की शिक्षा इन्दौर में मिशन स्कूल से प्रारम्भ हुई साथ ही संस्कृत, अंग्रेज़ी, संगीत तथा चित्रकला की शिक्षा अध्यापकों द्वारा घर पर ही दी जाती रही। बीच में विवाह जैसी बाधा पड़ जाने के कारण कुछ दिन शिक्षा स्थगित रही। विवाहोपरान्त महादेवी जी ने 1919 में क्रास्थवेट कॉलेज इलाहाबाद में प्रवेश लिया और कॉलेज के छात्रावास में रहने लगीं। 1921 में महादेवी जी ने आठवीं कक्षा में प्रान्त भर में प्रथम स्थान प्राप्त किया। यहीं पर उन्होंने अपने काव्य जीवन की शुरुआत की। वे सात वर्ष की अवस्था से ही कविता लिखने लगी थीं और 1925 तक जब उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की, वे एक सफल कवयित्री के रूप में प्रसिद्ध हो चुकी थीं। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आपकी कविताओं का प्रकाशन होने लगा था। कालेज में सुभद्रा कुमारी चौहान के साथ उनकी घनिष्ठ मित्रता हो गई। सुभद्रा कुमारी चौहान, महादेवी जी का हाथ पकड़कर सखियों के बीच में ले जाती और कहतीं- “सुनो, ये कविता भी

लिखती हैं।" 1932 में जब उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम०ए० पास किया तब तक उनके दो कविता-संग्रह नीहार तथा रश्मि प्रकाशित हो चुके थे।

सन् 1916 में उनके बाबा श्री बाँके विहारी ने इनका विवाह बरेली के पास नबावगंज कस्बे के निवासी श्री स्वरूप नारायण वर्मा से कर दिया, जो उस समय दसवीं कक्षा के विद्यार्थी थे। श्री वर्मा इण्टर करके लखनऊ मेडिकल कॉलेज में बोर्डिंग हाउस में रहने लगे। महादेवी जी उस समय क्रास्थवेट कॉलेज इलाहाबाद के छात्रावास में थीं। श्रीमती महादेवी वर्मा को विवाहित जीवन से विरक्ति थी। कारण कुछ भी रहा हो पर श्री स्वरूप नारायण वर्मा से कोई वैमनस्य नहीं था। सामान्य स्त्री-पुरुष के रूप में उनके सम्बन्ध मधुर ही रहे। दोनों में कभी-कभी पत्राचार भी होता था। यदा-कदा श्री वर्मा इलाहाबाद में उनसे मिलने भी आते थे। श्री वर्मा ने महादेवी जी के कहने पर भी दूसरा विवाह नहीं किया। महादेवी जी का जीवन तो एक संन्यासिनी का जीवन था। उन्होंने जीवन भर श्वेत वस्त्र पहना, तख्त पर सोईं और कभी शीशा नहीं देखा। सन् 1966 में पति की मृत्यु के बाद वे स्थायी रूप से इलाहाबाद में रहने लगीं।

महादेवी का कार्यक्षेत्र लेखन, सम्पादन और अध्यापन रहा। उन्होंने इलाहाबाद में प्रयाग महिला विद्यापीठ के विकास में महत्वपूर्ण योगदान

किया। यह कार्य अपने समय में महिला-शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी क़दम था। इसकी वे प्रधानाचार्य एवं कुलपति भी रहीं। 1923 में उन्होंने महिलाओं की प्रमुख पत्रिका 'चांद' का कार्यभार संभाला। 1930 में नीहार, 1932 में रश्मि, 1934 में नीरजा, तथा 1936 में सांध्यगीत नामक उनके चार कविता-संग्रह प्रकाशित हुए। 1939 में इन चारों काव्य संग्रहों को उनकी कलाकृतियों के साथ वृहदाकार में यामा शीर्षक से प्रकाशित किया गया। उन्होंने गद्य, काव्य, शिक्षा और चित्रकला; सभी क्षेत्रों में नए आयाम स्थापित किये। इसके अतिरिक्त उनकी 18 काव्य और गद्य कृतियां हैं जिनमें मेरा परिवार, स्मृति की रेखाएं, पथ के साथी, शृंखला की कड़ियाँ और अतीत के चलचित्र प्रमुख हैं।

सन् 1955 में महादेवी जी ने इलाहाबाद में साहित्यकार संसद की स्थापना की और पं इलाचंद्र जोशी के सहयोग से इस संस्था के मुखपत्र का सम्पादन कार्य संभाला। उन्होंने भारत में महिला कवि सम्मेलनों की नींव रखी।इस प्रकार का पहला अखिल भारतीय कवि सम्मेलन 15 अप्रैल 1933 को सुभद्रा कुमारी चौहान की अध्यक्षता में प्रयाग महिला विद्यापीठ में सम्पन्न हुआ। वे हिन्दी साहित्य में रहस्यवाद की प्रवर्तिका भी मानी जाती हैं। महादेवी बौद्ध पन्थ से बहुत प्रभावित थीं। महात्मा गांधी के प्रभाव से उन्होंने जनसेवा का व्रत लेकर कार्य किया और भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में भी हिस्सा लिया। 1936 में नैनीताल से 25 किलोमीटर दूर रामगढ़ कस्बे के उमागढ़ नामक गाँव में महादेवी वर्मा ने एक बंगला बनवाया था। जिसका नाम उन्होंने मीरा मन्दिर रखा था। जितने दिन वे यहाँ रहीं इस छोटे से गाँव की शिक्षा और विकास के लिए काम करती रहीं। विशेष रूप से महिलाओं की शिक्षा और उनकी आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए उन्होंने बहुत काम किया।

आजकल इस बंगले को महादेवी साहित्य संग्रहालय के नाम से जाना जाता है।शृंखला की कड़ियाँ में स्त्रियों की मुक्ति और विकास के लिए उन्होंने जिस साहस व दृढ़ता से आवाज़ उठाई हैं और जिस प्रकार सामाजिक रूढ़ियों की निन्दा की है उससे उन्हें महिला मुक्तिवादी भी कहा गया।महिलाओं व शिक्षा के विकास के कार्यों और जनसेवा के कारण उन्हें समाज-सुधारक भी कहा गया है।उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश समय उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद नगर में बिताया।

11 सितम्बर 1987 को इलाहाबाद में रात 9 बजकर 30 मिनट पर उनका देहांत हुआ। सोनरूपा विशाल

पुष्पांजलि के
नवीनतम अंक के
अवलोकनार्थ
क्लिक करें

देश की पहली साहित्यिक ई-पत्रिका जो पढ़ी और सुनी भी जा सकती है तथा जिसमें संगीत के लिंक्स भी है जिनसे निर्मल आनंद उठाया जा सकता है।

मूल्य : मात्र आपकी मुस्कान

सामने दिए गए चिह्न को दबाने से आपका सन्देश स्वचलित रूप से हमें पहुँच जाएगा और नियमित पत्रिकाएँ भेजने के लिए आपका मोबाइल नं. पंजीकृत हो जाएगा।

8610502230 (केवल संदेश हेतु)
(कृपया अपना नाम व शहर का नाम भी लिखें)

श्री रमेश उपाध्याय 'बाँसुरी'

जन्म: 27 फरवरी 1952

निधन: 05 जनवरी 2022

सुन री ओ किसोरी तो से कहूँ कर जोरी
तेरी थोड़ी-सी कृपा की कौन डार दे या दास पै
ज्ञान से विहीन जान बालक की हठ मान
आ गयो मैं पौर तेरी भारी विसवास पै
चाहे तू उद्धार चाहे छोड मझधार; पर
पानी मत फेर दयो देख मेरी आस पै
बावरो रमेस थारी बाँसुरी के छन्द गाये
चर्चा तो चलइयो कोई हास-परिहास पै

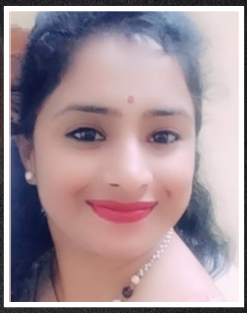

श्रीमती दिव्या दुबे 'नेह'

जन्म: 07 अक्टूबर 1987

निधन: 01 जनवरी 2022

ऐसा भी नहीं मुझसे वो प्यार नहीं करते
वो प्यार तो करते हैं इज़हार नहीं करते

हालात के तीरों से छलनी है जिगर अपना
लेकिन कभी ज़ख़्मों को अख़बार नहीं करते

हम लोग मुहब्बत में कर देते हैं जां कुर्बान
हम लोग मुहब्बत का व्यापार नहीं करते

अक्सर वो उठाते हैं औरों की तरफ़ उंगली
जो लोग भी तामीरे-किरदार नहीं करते

गर इश्क़ बग़ावत है सूली पे चढ़ा दीजे
बाग़ी हैं बग़ावत से इंकार नहीं करते

शायर हैं ज़ुबानों पर मरहम लिए फिरते हैं
'नेहा' कभी लहजे को तलवार नहीं करते

KAVIGRAM.COM

- मुखपृष्ठ
- प्रकाशन
- काव्यलोक
- समाचार लोक
- पुराने चावल
- फिल्म निर्माण
- कविग्राम पत्रिका
- कवि-सम्मेलन बुकिंग
- कवि-सम्मेलन संग्रहालय
- सम्पर्क

- कविग्राम फेसबुक समूह
- कविग्राम फेसबुक पेज
- कविग्राम ट्विटर
- कविग्राम इंस्टाग्राम
- कविग्राम टेलीग्राम

कविग्राम यूट्यूब चैनल